IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, December 2025
Impact Factor: 7.67

तुलसीदास की रामचरितमानस: मर्यादा, प्रेम और सामाजिक दर्शन

डॉ. आशुतोष शुक्ला

अतिथि विद्वान -हिंदी विभाग

शासकीय ठाकुर राणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म. प्र.)

सारांश

तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस हिंदी साहित्य की एक अमर कृति है, जो भक्ति काल की राम भक्ति शाखा की शीर्ष रचना मानी जाती है। यह ग्रंथ न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व रखता है, बल्कि सामाजिक, नैतिक और दार्शनिक मूल्यों का भी विस्तृत चित्रण प्रस्तुत करता है। इस शोध पत्र में रामचरितमानस के प्रमुख विषयों—मर्यादा (धार्मिक और सामाजिक नियमों का पालन), प्रेम (भक्ति और मानवीय प्रेम) तथा सामाजिक दर्शन (समाज की संरचना, समानता और लोक कल्याण)—का विश्लेषण किया गया है। तुलसीदास ने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चित्रित कर समाज को आदर्श जीवन का मार्ग दिखाया है, जहां प्रेम भक्ति का आधार है और सामाजिक दर्शन लोक मंगल पर केंद्रित है। यह अध्ययन रामचरितमानस के पाठ्य विश्लेषण, ऐतिहासिक संदर्भ और समकालीन प्रासंगिकता पर आधारित है। परिणामस्वरूप, यह सिद्ध होता है कि रामचरितमानस आज भी सामाजिक सुधार और नैतिक उत्थान के लिए प्रासंगिक है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-30200

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 1, December 2025
Impact Factor: 7.67

कीवर्ड्स:

रामचरितमानस, तुलसीदास, मर्यादा, प्रेम, भक्ति, सामाजिक दर्शन, लोक मंगल, रामराज्य, धार्मिक समन्वय, नैतिक मूल्य।